डॉ. मारिया मान्टेसरी के शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता

विनीता गुप्ता*

डॉ. मारिया मान्टेसरी अध्यात्मवादी और भौतिकवादी दर्शनों के मानवतावादी विचारों की अनुयायी थीं। इन्होंने जो नवीन शिक्षा पद्धति बताई वह आज विश्व में 'मान्टेसरी पद्धति' के नाम से विख्यात है। डॉ. मान्टेसरी की शिक्षण पद्धति की वर्तमान में भी उतनी ही प्रासंगिकता है जितनी उस समय थी। उनकी यह प्रणाली शिशुओं के मनोविज्ञान पर आधारित है। बच्चों को स्वयं करके एवं स्वयं के अनुभव से सीखने का अवसर प्रदान किये जाते हैं। इस पद्धति में डॉ. मान्टेसरी ने सभी महान शिक्षकों के शिक्षा सिद्धांतों को स्थान देने का प्रयास किया है।

डॉ. मान्टेसरी का परिचय

एक शिक्षाशास्त्री के रूप में डॉ. मारिया मान्टेसरी का नाम बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है। इनका जन्म 1870 में इटली के अन्कोना प्रदेश के शियारैवेल नगर में हुआ था। मान्टेसरी को उस समय श्रेष्ठतम शिक्षा प्राप्त हुई थी। 24 वर्ष की अवस्था में सन् 1894 ई. में रोम के विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। डॉक्टरी की परीक्षा प्राप्त करने के पश्चात उसी विश्वविद्यालय में उन्हें पिछड़े हुये तथा मन्द बुद्धि बालकों की शिक्षा का भार सौंपा गया। अपने इस कर्तव्य को उन्होंने सफलतापूर्वक निभाया और पिछड़े हुये बालकों की शिक्षा के संबंध में अनेक अन्वेषण किये।

डॉ. मान्टेसरी आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करती थीं इस कारण कुछ लोग इन्हें आदर्शवादी मानते हैं। इन्होंने चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की थी इसलिए ये विकासवाद में विश्वास करती थीं और विश्वास जगत को यथार्थ मानती थीं। इस आधार पर कुछ विद्वान

* *रीडर एवं अध्यक्षा* (शिक्षा विभाग), दाऊदयाल महिला महाविद्यालय, फिरोज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

इन्हें यथार्थवादी मानते हैं। ये रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा से भी प्रभावित थीं और शिशुओं के स्वतंत्र विकास पर बल देती थीं। इस आधार पर कुछ विद्वान इन्हें प्रकृतिवादी मानते हैं। ये मानवमात्र को सुखी देखना चाहती थीं। इस आधार पर कुछ विद्वान इन्हें मानवतावादी मानते हैं। परंतु न तो इनका अपना कोई मौलिक दार्शनिक चिंतन था और न ही ये किसी दार्शनिक चिंतन की विशेष अनुयायी थीं। वे तो उनके अध्यात्मवादी और भौतिकवादी दर्शनों के मानवतावादी विचारों की अनुयायी थीं।

मान्टेसरी ने एक नवीन शिक्षा पद्धति का आविष्कार किया, जो आज विश्व में 'मान्टेसरी पद्धति' के नाम से विख्यात है।

मान्टेसरी के मन में यह विचार प्रस्फुटित हुआ, **''मानसिक दोष वाले बच्चों को शिक्षा देने के लिए जिस पद्धति का प्रयोग किया जाता है, उसका प्रयोग सामान्य बालकों को शिक्षा देने के लिए किया जाए, तो उसके परिणाम कहीं अधिक आश्चर्यजनक होंगे।''** (पाठक व त्यागी, 2011)

'गुड बिल्डिंग की रोमन ऐसोसिएशन' के डॉयरेक्टर जनरल ने योजना बनाई कि प्रत्येक बस्ती में ***'बचपन का घर'*** अथवा ***'बाल-गृह'*** स्थापित किया जाए, जिसमें निर्धन व्यक्तियों के 3 से 7 वर्ष तक के बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त करने, खेलने-कूदने और कुछ काम करने का अवसर दिया जाए। 1906 के अंत में इन बाल-गृहों अथवा शिशु विद्यालयों के संचालन एवं निरीक्षण का कार्य डॉ. मारिया मान्टेसरी को सौंपा गया।

शिशु-शिक्षा में असीम अभिरुचि रखने के कारण मान्टेसरी ने इस अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया। उन्होंने 6 जनवरी 1907 को प्रथम बाल-गृह की योजना को पूर्ण करके, उसके संचालन का शुभारम्भ किया। उस संस्था की संचालिका एवं अध्यक्ष के रूप में मान्टेसरी ने अपनी शिक्षा पद्धति का वैज्ञानिक ढंग से प्रयोग एवं परीक्षण किया। इस परीक्षण के अंत में, वह जिन परिणामों पर पहुँचीं, उसको स्वयं मान्टेसरी ने अपने शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया।

''यह परीक्षण, छोटे बच्चों की शिक्षा के संबंध में प्रयोग की जाने वाली उन विधियों के अनेक परिणामों को प्रकट करता है जिनका मन्द-बुद्धि बालकों के लिए प्रयोग किया जा चुका था।'' (एलैक्स, 2008)

शिक्षा के क्षेत्र में किये गये अपने परीक्षणों का सकारात्मक प्रभाव देखकर वह इतनी उत्साहित हुईं की उन्होंने संपूर्ण विश्व में नवीन शिक्षा पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए घूमना शुरू कर दिया। विश्व के कई देशों में शिक्षा शास्त्रियों एवं शिक्षा समितियों की मदद से उन्होंने मान्टेसरी स्कूलों की श्रृंखला प्रारंभ की। भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी के आमंत्रण पर वह 1939 में और 1948 में पुन: स्वेच्छा से भारत आईं दोनों अवसरों पर उन्होंने पूना, मद्रास, अहमदाबाद और अन्य अनेक स्थानों पर मान्टेसरी स्कूलों का शिलान्यास किया। सन् 1952 में इस महान शिक्षा विशारद ने अपने शरीर का त्याग कर दिया।

आज मान्टेसरी पद्धति यूरोप, अमेरिका, चीन, फिलीपीन, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका तथा अन्य देशों में तेज़ी से फैल रही है। इसका कारण है कि इसके सिद्धांत मानव विकास की स्वाभाविक आवश्यकता तथा क्रम पर निर्मित

हैं। अपनी ज़मीन पर खड़े होकर आज के देश जिस प्रकार की शिक्षा पद्धति की अपेक्षा करते हैं वैसी शिक्षा पद्धति मान्टेसरी के सिद्धांतों पर आयोजित करके उपलब्ध की जा सकती है।

अध्ययन का उद्देश्य

डॉ. मारिया मान्टेसरी के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण करना।

शोध विधि

अध्ययन का उद्देश्य डॉ. मारिया मान्टेसरी के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण करना है। अतः अध्ययन की प्रकृति के अनुरूप ही अध्ययन हेतु विषयवस्तु विश्लेषण विधि अपनाई गई है।

प्रदत्तों का एकत्रीकरण एवं प्रस्तुतीकरण

शिक्षा के विभिन्न पक्षों से संबंधित डॉ. मान्टेसरी के विचार निम्नानुसार हैं-

डॉ. मारिया मान्टेसरी के शैक्षणिक विचार

डॉ. मान्टेसरी ने स्पष्ट किया कि जन्म के समय मानव शिशु शारीरिक दृष्टि से तो पशु शिशुओं से कम विकसित होता है परंतु उसमें विकास की क्षमताएँ पशु शिशुओं से अधिक होती हैं। इनके अनुसार शिक्षा मनुष्य की इन जन्मजात क्षमताओं के विकास में सहायता करती है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसमें नई-नई परिस्थितियों में समायोजन करने की क्षमता विकसित की जा सकती है। इनकी दृष्टि से वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य की जन्मजात क्षमताओं का विकास करती है, उसे नई-नई परिस्थितियों में समायोजन करने योग्य बनाती है। इनका मानना है कि शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है जो बालक को जीवन के कार्यकलापों से परिचित कराती है।

शिक्षा का प्रयोजन या उद्देश्य

1. शिशुओं को जन्मजात क्षमताओं के विकास में सहायता करना। उनकी कर्मेन्द्रियों, ज्ञानेन्द्रियों और बुद्धि का विकास करना।
2. शिशुओं को अपने पर्यावरण का ज्ञान कराना और उसमें समायोजन करने की क्षमता का विकास करना।
3. शिशुओं को जीवन के लिए तैयार करना।
4. शिशुओं का नैतिक विकास करना, उन्हें शान्ति और सेवा का पाठ पढ़ाना।

मान्टेसरी के अनुसार -

> *''मानव जाति अपनी समस्याओं का, जिनमें शान्ति एवं एकता है, तभी समाधान कर सकती है जब उसका ध्यान एवं समस्त शक्तियाँ व्यक्तित्व की असीम सम्भावनाओं के विकास में लग जाएँ।''* (पाठक व त्यागी, 2011)

पाठ्यक्रम का स्वरूप

डॉ. मान्टेसरी का मानना था कि शिशु पर अनावश्यक बोझ और दबाव न डाला जाए। इनके अनुसार शिशु की क्षमता के अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्माण होना ज़रूरी है। पाठ्यक्रम में वैयक्तिक आवश्यकताओं एवं विकास को अनिवार्यतः स्थान देने की ज़रूरत है। शिशु की वैयक्तिक रुचियों, प्रवृत्तियों एवं अंतः निहित शक्तियों को ध्यान में रखकर ही पाठ्यक्रम का निर्माण होना चाहिए। मान्टेसरी ने शिशुओं के लिए पाठ्यक्रम की

दो विशेषताएँ बतायी हैं। **पहली** – पाठ्यक्रम बालकों की रुचियों, क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के अनुकूल होना चाहिए। **दूसरी** – पाठ्यक्रम बालकों की कर्मेन्द्रियों को प्रशिक्षित करके, उनको व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करे, उन्हें अपना स्वभाविक विकास करने में योगदान दे और वास्तविक जीवन के लिए तैयार करे।

मान्टेसरी ने पाठ्यक्रम में क्रियात्मक एवं रचनात्मक विषयों को स्थान दिया और पहली से पाँचवीं कक्षा तक के लिए यह रूपरेखा तैयार की–

1. कक्षा एक

फीते बाँधना, बटन लगाना और खोलना, छोटी–छोटी मेज़ों, कुर्सियों आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना, ठंडी और गरम, मोटी और पतली, ऊँची और नीची, चिकनी और खुरदरी वस्तुओं में अंतर कराना आदि।

2. कक्षा दो

आसपास के स्थान को स्वच्छ रखना, उचित स्थान पर बैठना, उचित प्रकार से भोजन करना, अपने आप नहाना, हाथ मुँह धोना, कपड़े पहनना और उतारना, छोटी और बड़ी, लंबी और पतली एवं विभिन्न रंगों की वस्तुओं में अंतर करना आदि।

3. कक्षा तीन

गति, दृष्टि और स्पर्श–संबंधी अभ्यास करना, सीधी रेखा पर चलकर, शरीर पर नियन्त्रण करना, अक्षर ज्ञान प्राप्त करना, ड्राइंग का अभ्यास करना इत्यादि।

4. कक्षा चार

भोजन परोसना और बर्तन धोना, कमरे की वस्तुओं को ठीक स्थान पर रखना, गति–संबंधी अभ्यास करना और विभिन्न गतियों की पहचान करना, विभिन्न वस्तुओं की सहायता से गिनती का ज्ञान प्राप्त करना, पढ़ने, लिखने ड्राइंग का ज्ञान प्राप्त करना इत्यादि।

5. कक्षा पाँच

उपर्युक्त सब बातों का अभ्यास करना, शारीरिक स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना, समय और शिष्टाचार का अभ्यास करना, भौगोलिक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक शब्दों का ज्ञान प्राप्त करना, खेल द्वारा व्याकरण की शिक्षा प्राप्त करना आदि।

मान्टेसरी प्रणाली के शिक्षा सिद्धांत

मान्टेसरी रूसों के प्रकृतिवाद से प्रभावित थीं और पेस्टालॉजी के मनोविज्ञान के प्रति उनका आकर्षण था। मान्टेसरी ने समय की माँग के अनुसार अपने शिक्षा सिद्धांतों को नवीन मनोविज्ञान पर आधारित किया। मान्टेसरी पद्धति में शिक्षा प्रदान करने के निम्न आधार स्तंभ हैं –

1. ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण का सिद्धांत

मान्टेसरी ने स्पष्ट किया कि किसी भी प्रकार का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों और मस्तिष्क के संयोग से प्राप्त होता है। उनका सिद्धांत है कि **प्रारम्भिक अवस्थाओं में शिक्षा को इन्द्रिय – प्रशिक्षण पर आधारित किया जाना चाहिए और प्रशिक्षण इस प्रकार दिया जाना चाहिए कि प्रत्येक बालक को अपने स्वयं के विकास के लिए स्वेच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो।'** (एलैक्स, 2008)

मान्टेसरी का कहना था कि ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञान के प्रवेश द्वार हैं अतः उनका प्रशिक्षण एवं विकास बच्चों के लिए जीवनपर्यन्त ज्ञानार्जन की सही पृष्ठभूमि तैयार कर सकता है। 3 – 7 वर्ष तक की आयु में बच्चों की ज्ञानेन्द्रियाँ

सबसे अधिक सक्रिय होती हैं तथा इसी अवस्था में बच्चे बहुत कुछ सीख लेते हैं।

2. शारीरिक अवयवों के प्रशिक्षण का सिद्धांत

हमारी समस्त शारीरिक एवं मानसिक चेष्टाएँ मांसपेशियों पर निर्भर करती हैं। अतः इनको पुष्ट बनाना चाहिए। इस प्रशिक्षण से बच्चे चलना, दौड़ना, लिखना तथा अन्य हस्तकार्य करना स्वतः ही सीख जाते हैं और उनमें अपना कार्य स्वयं करने की आदत पड़ जाती है। इससे बालक में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के गुणों का विकास होता है।

मान्टेसरी ने अपनी शिक्षण पद्धति में मांसपेशियों के प्रशिक्षण पर बल देते हुए कहा है – **''बालक एक ऐसा प्राणी है जिसे अपने शरीर की विभिन्न मांसपेशियों की गति पर भरोसा नहीं होता है। अतः उसे सब संबंधित गतियों की शिक्षा देना आवश्यक है।''** (पाठक व त्यागी, 2011)

3. आत्म शिक्षा का सिद्धांत

मान्टेसरी ने स्पष्ट किया कि सीखना मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति है। शिशुओं के सामने ऐसा वातावरण उपस्थित करो कि वे स्वयं उसे जानने की ओर बढ़ें जिसे आप सिखाना चाहते हैं, स्वयं से प्रेरित होकर सीखने को उन्होंने आत्मशिक्षा की संज्ञा दी। उन्होंने यह भी कहा कि बच्चों के क्रियाशीलनों तथा सीखने के कार्यों में यदि शिक्षक दखल देता है और नियंत्रण उपस्थित करता है तो सीखने की क्रिया प्रभावकारी नहीं होती। (पाण्डेय, 2010)

आत्मशिक्षा के लिए मान्टेसरी ने कुछ शैक्षिक यंत्रों का निर्माण किया है। बालक इन यन्त्रों के साथ खेलता है। इनको प्रबोधक यंत्र कहा जाता है। जब बालक एक प्रकार के यंत्र से खेलते-खेलते थक जाता है तो इसे छोड़ देता है। फिर वह दूसरे यन्त्र की ओर प्रेरित होता है। यह प्रेरणा उसे आत्मा से मिलती है। अतः बालक बड़ी रुचि के साथ खेलता और आनन्दमग्न होता है।

4. आत्म विकास का सिद्धांत

उनका विश्वास है कि बालक अपनी अन्तर्निहित शक्तियों द्वारा अपना विकास कर सकता है न कि बाहर की शक्तियों से।

5. वैयक्तिकता का सिद्धांत

इस पद्धति में शिशु की वैयक्तिकता को महत्त्व दिया जाता है। कोई भी दो शिशु योग्यताओं और क्षमताओं में समान नहीं होते और न ही उनकी रुचियाँ और आवश्यकताएँ एक-सी होती हैं। मान्टेसरी के अनुसार शिशुओं को अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार बढ़ने के अवसर देने चाहिए तथा रुचि एवं आवश्यकतानुसार सीखने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

6. तार्किक अनुशासन का सिद्धांत

मान्टेसरी पूर्ण स्वतंत्रता की पक्षधर थीं, वे अनुशासन की प्राप्ति भी स्वतंत्रता द्वारा प्राप्त करने में विश्वास करती हैं। इनके विचार से अनुशासन एक आन्तरिक प्रेरक है, इसे किसी बाह्य दवाब से नहीं अपितु प्रेरणा से विकसित किया जा सकता है। बच्चों की अलग मानसिकता एवं मनोभाव होता है। अगर उनकी रुचि के अनुसार उन्हें सीखने का मौका दिया जाए तो इनके अंदर अनुशासनहीनता की स्थिति कभी पैदा नहीं होगी। छात्रों में उत्तरदायित्व की भावना विकसित करनी चाहिए, जिससे वह अनुशासन के प्रति सजग रहें। तर्क पर आधारित अनुशासन बालकों को स्वयं ही अनुशासित रहने के लिए

प्रेरित करता है। वे वास्तविक अनुशासन के लिए उच्च सामाजिक पर्यावरण और सामाजिक कार्यों के महत्त्व को स्वीकार करती थीं। इस प्रकार से विकसित अनुशासन को इन्होंने तार्किक अनुशासन की संज्ञा दी है।

7. क्रियाशीलता एवं खेल विधि द्वारा शिक्षा का सिद्धांत

फॉबेल के समान मान्टेसरी ने भी शिक्षण पद्धति में खेल द्वारा शिक्षा के सिद्धांत को स्थान दिया है। सीखने में बच्चे जितने अधिक क्रियाशील होते हैं उतनी ही अधिक तीव्रता से सीखते हैं। बालक विभिन्न प्रकार के उपकरणों से खेलकर अक्षरों, गणित, रेखागणित आदि का ज्ञान प्राप्त करता है। खेल ही उसकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित करते हैं। यह खेल साधारण खेलों से भिन्न हैं इनमें बच्चों को वास्तव में कार्य कराया जाता है।

8. मनोवैज्ञानिक क्षण का सिद्धांत

मान्टेसरी ने अनुभव किया कि प्रत्येक बच्चे के अंदर कुछ जानने की जिज्ञासा एकाएक उत्पन्न होती है, इसे इन्होंने मनोवैज्ञानिक क्षण का नाम दिया। उन्होंने कहा कि उन क्षणों में उन्हें वह सब सीखने एवं जानने के लिए एक ऐसा पर्यावरण देना चाहिए जिसमें उनकी जिज्ञासा एवं आवश्यकता की संतुष्टि हो।

9. स्वाभाविकता और स्वतंत्रता का सिद्धांत

मान्टेसरी ने बालक के सम्यक विकास के लिए स्वतंत्रता तथा स्वेच्छा को अनिवार्य माना। इसीलिए अपनी प्रणाली में पाठ्यक्रम अथवा समय-सारणी के निर्माण को उन्होंने अनावश्यक बताया। उन्होंने शिशु के स्वाभाविक विकास के लिए स्वतंत्र वातावरण को उपादेय माना। मान्टेसरी का कथन है कि बालक का स्वाभाविक विकास उसी दिशा में संभव है जहाँ उसे अपने विचारों, रुझानों, रुचियों आदि को व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी जाए। स्वतंत्रता न मिलने से उसकी जीवन शक्ति का दमन हो सकता है।

मान्टेसरी का कथन है –

> *''हम यह ठीक प्रकार से नहीं बता सकते हैं कि जब बालक में क्रिया शक्ति का विकास प्रारंभ हो रहा हो, तब उसकी स्वतंत्र क्रिया को दमन करने का क्या परिणाम हो सकता है कि हम उसकी जीवन शक्ति का भी दमन कर दें।''* (मैरी एलैक्स, 2008)

10. सामाजिक प्रशिक्षण का सिद्धांत

मान्टेसरी पद्धति की प्रमुख विशेषता है – सामाजिक प्रशिक्षण के सिद्धांत पर बल। शिशु गृहों में बालकों को अपने सभी कार्य स्वयं करने पड़ते हैं जैसे – कमरा साफ़ करना, भोजन परोसना आदि। वह इन कार्यों को अकेले या मिलजुलकर करता है जिससे उसमें सहयोग, सामंजस्य और उत्तरदायित्व की भावनाओं का विकास होता है जो उनके भावी सामाजिक जीवन में उपयोगी होती हैं।

11. उपयुक्त वातावरण का सिद्धांत

डॉ. मान्टेसरी ने बाल गृहों को वास्तविक विद्यालय बताया। यहाँ पर बालक रचनात्मक कार्यों में जुटे रहते हैं और इसमें आनन्द लेते हुए नई बातें सीखते हैं।

मान्टेसरी का आग्रह है कि बालक के स्वाभाविक विकास के लिए उपयुक्त वातावरण का होना अनिवार्य है। यदि उसे इस वातावरण

में किसी प्रकार के हस्तक्षेप के बिना, स्वेच्छा से कार्य करने की अप्रतिबन्धित स्वतंत्रता प्रदान कर दी जाए तो वह अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सफल होगा और आत्मनिर्भर बनकर, व्यवहार कुशल हो जाएगा।

मान्टेसरी प्रणाली में प्रयुक्त होने वाले उपकरण

मान्टेसरी प्रणाली में प्रमुख रूप से तीन प्रकार के उपकरण प्रयुक्त होते हैं-

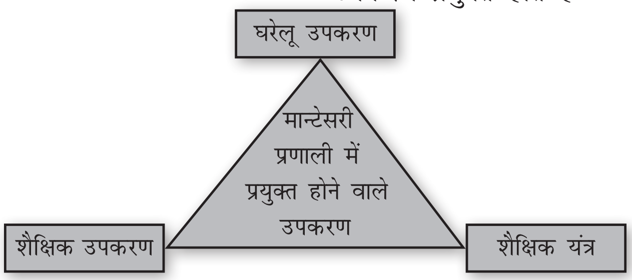

1. घरेलू उपकरण

घरेलू उपकरणों में झाड़न, मंजन, तेल, साबुन, तौलिया, कंघा, शीशा, जूते की पॉलिश, सुई-धागा व कैंची, खाना बनाने की सामग्री, खाना खाने के बर्तन और बर्तन साफ़ करने का पाउडर आदि आते हैं।

2. शैक्षिक उपकरण

इसमें श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, चार्ट एवं अन्य शैक्षिक उपकरण आते हैं।

3. शैक्षिक यन्त्र

शैक्षिक यंत्रों में मान्टेसरी द्वारा तैयार किये गये उपदेशात्मक उपकरण आते हैं। मान्टेसरी इस बात पर बल देती थीं कि शैक्षिक यन्त्र ऐसे हों कि बच्चे उनमें रुचि लें, उनसे उनकी कर्मेन्द्रियाँ मजबूत हों और उनसे उनकी ज्ञानेन्द्रियाँ प्रशिक्षित हों। कुछ ऐसे यन्त्र इस प्रकार हैं-

1. छोटे-बड़े आकार के बेलन।
2. छोटे-बड़े आकार के घन।
3. छोटे-बड़े आयताकार ठोस।
4. भिन्न-भिन्न आकार के ठोस।
5. एक लकड़ी का तख्ता जिस पर भिन्न-भिन्न आकार और माप के छेद होते हैं और एक लकड़ी का बॉक्स जिसमें इन छेदों में फ़िट होने वाले गुटके रखे होते हैं।
6. चिकनी और खुरदरी सतह वाले ठोस।
7. विभिन्न रंगों में रँगी लकड़ी की टिकियाएँ।
8. भिन्न-भिन्न ध्वनि उत्पन्न करने वाली घंटियाँ।
9. भिन्न-भिन्न वजन के ठोस।
10. भिन्न स्वाद वाले भोज्य पदार्थ, नमक, मिर्च, खटाई, मिठाई, आदि।
11. भिन्न-भिन्न सुगन्ध वाले पदार्थों से भरी बोतलें।
12. लकड़ी अथवा गत्ते के बने अक्षर।
13. अक्षरों की कटी हुई आकृतियाँ।
14. फ्लैश कार्ड।
15. विभिन्न प्रकार के चित्र।
16. अंकों के कार्ड।

17. गिनती के लिए छोटे–छोटे आकार के गुटके।
18. चिकने कागज़ पर बने अंक।
19. फीते व बटन के फ्रेम और
20. ड्राइंग पोथी एवं रंगीन पेन्सिलें।

इन यंत्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनका प्रयोग करते समय भूल सुधार बच्चे स्वयं करते हैं। इससे बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है।

मान्टेसरी शिक्षण प्रणाली एवं अनुशासन व्यवस्था

वह आत्मअनुशासन की पक्षधर थीं और शिशुओं में इनके विकास करने के लिए उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता देने में विश्वास करती थीं। मान्टेसरी ने चुनौती दी कि उसके स्कूलों में अनुशासन की समस्या की कभी भी एक झलक देखने की आशा करना, दुराशा मात्र है। उनके अनुसार इसके तीन कारण हैं –

- बालक अपनी रुचियों से निर्देशित होकर कार्य करते हैं।
- उनको अपने कार्य का न तो पुरस्कार मिलता है और न दंड। जिस कार्य को वे करते हैं, उसमें सफलता या असफलता प्राप्त करना ही उनका पुरस्कार या दंड होता है।
- वे विभिन्न प्रकार के शिक्षा के उपकरणों के माध्यम से किये जाने वाले कार्य में इतने तल्लीन होते हैं कि उनमें व्यर्थ के कार्यों को करके, अनुशासन भंग करने का विचार उत्पन्न ही नहीं होता है।

मान्टेसरी शिक्षण पद्धति एवं शिक्षक की अवधारणा

शिक्षक के संबंध में मान्टेसरी ने लिखा है कि उनको बहुत संवेदनशील और मातृतुल्य व्यवहार करने वाला होना चाहिए इसलिए वह केवल महिलाओं की नियुक्ति करने के पक्ष में थीं। इनका तर्क था कि महिलाएँ, पुरुषों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होती हैं और शिशुओं की समस्याओं को अपेक्षाकृत अधिक समझती हैं।

मान्टेसरी स्कूल की अध्यापिका पुरानी परिपाटी के अनुसार ज़ोर से चिल्लाकर और डरा–धमकाकर अपनी बातों को सुनाने के लिए विवश नहीं करती है। इसके विपरीत वह स्कूल में स्नेह एवं सहानुभूति के वातावरण का सृजन करके, बालकों को स्वयं ज्ञान प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होने के लिए अनुप्राणित करती हैं और उनके कार्यों का हर समय सतर्कता से अवलोकन करती हुई समय–समय पर उनका निर्देशन करती है, ताकि वे अज्ञानवश वांछित लक्ष्य से दूर भटक कर निराशा के गहरे गर्त में न गिर पड़ें। इसलिये मान्टेसरी ने अध्यापिका शब्द के स्थान पर निर्देशिका शब्द प्रयुक्त किया है। मान्टेसरी ने शिक्षिका में पाँच गुणों का होना आवश्यक बताया है –

- नम्रता
- शिशु प्रेम
- श्रद्धा
- निष्पक्षता
- धैर्य

मान्टेसरी शिक्षण पद्धति एवं छात्र अवधारणा

मान्टेसरी अन्य आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों की तरह शिक्षार्थी को शिक्षा का केंद्र मानती थीं। इसीलिए उन्होंने उद्घोष किया कि शिशुओं को अपने विकास के पूर्ण एवं स्वतंत्र अवसर देने चाहिए,

शिशु शिक्षा की सारी योजना उनकी नैसर्गिक योग्यताओं, रुचियों और आवश्यकताओं के आधार पर बनानी चाहिए।

मान्टेसरी शिक्षण पद्धति एवं विद्यालय

मान्टेसरी ने केवल शिशु विद्यालयों के संबंध में अपने विचार प्रकट किये हैं। उन्होंने शिशुओं के स्कूलों को बालगृह का नाम दिया है। शिशु विद्यालय के स्वरूप के विषय में डॉ. मारिया मान्टेसरी ने कहा है कि यह विद्यालय, अबोध बालकों के मस्तिष्क में ज्ञान ठूँसने वाला कारखाना न होकर, घर के समान प्रिय एवं सुखद स्थान होना चाहिए। अतः विद्यालय का वातावरण घर के समान होना चाहिए। इस वातावरण में बालक-अध्यापिका के स्नेह एवं सहानुभूति की छाया में अपने कार्य और खेल में पूर्ण स्वतंत्रता का उपयोग करते हैं।

इनके अनुसार प्रत्येक मान्टेसरी स्कूल में एक बड़ा कक्ष होना चाहिए और छात्रों की संख्यानुसार कुछ छोटे-छोटे कक्ष होने चाहिए। बड़ा कक्ष अध्ययन करने और छोटे कक्ष अन्य दैनिक कार्यो - हाथ पैर धोने, स्नान करने, कपड़े बदलने, भोजन करने और खेलने आदि के संपादन हेतु। इन कमरों में शिशुओं की आयु एवं आकार के अनुरूप ही मेज़, कुर्सियाँ, पलंग एवं अलमारी आदि होने चाहिए। मान्टेसरी स्कूल में खेलने के लिए खुला मैदान और बागवानी करने के लिए छोटा-सा बगीचा भी होना आवश्यक होता है, वहाँ बच्चे प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करते हैं और ताज़ी हवा और सूर्य का प्रकाश प्राप्त करते हैं।

मान्टेसरी पद्धति में विद्यालयों में छात्रों को उन्मुक्त वातावरण प्रदान किया जाता है। इससे उनमें वैचारिक शक्ति के विकास के साथ-साथ आत्मनिर्भरता संबंधी गुणों का भी विकास होता है और वे अपना और दूसरों का सम्मान करना सीखते हैं। इसमें कठोर सम विभाग-चक्र नहीं होता है।

डॉ. मान्टेसरी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता

मान्टेसरी शिक्षक प्रणाली में तीन प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती है - कर्मेन्द्रियों की शिक्षा, ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा और भाषा एवं गणित की शिक्षा।

ज्ञानेन्द्रियों को सुदृढ़ बनाने के पश्चात भाषा शिक्षण दिया जाता है। इसके बारे में मान्टेसरी के विचार बिलकुल अलग हैं। वे बच्चों को पढ़ना सिखाने से पहले लिखना सिखाने पर बल देती थीं। उनका तर्क है कि लिखने की क्रिया पढ़ने की क्रिया से सरल होती है क्योंकि लिखने में केवल अक्षरों की आकृतियों का अनुकरण करना होता है जबकि पढ़ने में शब्द एवं वाक्यों का उच्चारण करना होता है। इन्होंने गणित सिखाने के लिए भी भिन्न-भिन्न शिक्षण यन्त्रों का प्रयोग किया है।

डॉ. मान्टेसरी की शिक्षण पद्धति की वर्तमान में भी उतनी प्रासंगिकता है जितनी उस समय थी। उनकी यह प्रणाली शिशुओं के मनोविज्ञान पर आधारित है। शिशुओं को रुचिकर क्रियाओं द्वारा सीखने के अवसर दिए जाते हैं। बच्चों को स्वयं करके एवं स्वयं के अनुभव से सीखने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। छात्रों को घर जैसा वातावरण

विद्यालय में मिलता है। विद्यालय छात्रों के लिए आकर्षण का केंद्र होता है क्योंकि वहाँ दैनिक जीवन की वास्तविक क्रियाएँ करायी जाती हैं। लिखना सिखाने की विधि भी बहुत उपयुक्त है। लकड़ी तथा गत्ते की कटिंग से बच्चे अक्षरों को लिखना जल्दी सीख लेते हैं। मान्टेसरी शिक्षण पद्धति द्वारा आत्मानुशासन और सौन्दर्य भावना का विकास होता है।

मान्टेसरी पद्धति के मानने वाले शिक्षाविद् बालकों को पाठ्यक्रम और समय विभाग चक्र से मुक्त करेंगे तथा परीक्षा के वर्तमान प्रयासों को प्रयोगात्मक रूप में अपना लेंगे। अब तक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को सुनागरिक बनाना, वफ़ादार नागरिक बनाना, अपने पैरों पर खड़ा रहने वाला, आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र आदि बनाना रहा है। इस पद्धति के शिक्षाविद् इन तमाम उद्देश्यों को त्यागकर सिर्फ़ मानवीय विकास को ही शिक्षण के उद्देश्य के रूप में स्थापित करेंगे और विकास को ही पाठ्यक्रम मानेंगे और इसी को परीक्षा।

निष्कर्ष

इस प्रकार मान्टेसरी पद्धति सिर्फ़ शिक्षण पद्धति नहीं है, न यह शिक्षा जगत का एक क्रान्तिकारी विचार है, न वैज्ञानिक जगत का नूतन सत्य, न आर्थिक समस्याओं का एकान्तिक समाधान या जबाव है, न ही वर्तमान राजनीतिक उलझन का रामबाण इलाज। यह तो एक दृष्टि है, एक नया प्रकाश है, इस पद्धति में डॉ. मान्टेसरी ने सभी महान शिक्षकों के शिक्षा सिद्धांतों को स्थान देने का प्रयास किया है। मान्टेसरी ने विशेष रूप से किन्डरगार्टन पद्धति को परिष्कृत करके ज़्यादा लाभकारी बनाने का प्रयत्न किया है। मान्टेसरी के कार्यों की सराहना करते हुए एक शिक्षाविद् होम्स (Homes) का कहना है– *''डॉ. मान्टेसरी का कार्य अद्वितीय, अनोखा और गौरवपूर्ण है। हमारे पास शिक्षा प्रणाली का कोई ऐसा अन्य उदाहरण नहीं है, जो कम-से-कम अपनी क्रमबद्धपूर्णता और अपने व्यावहारिक प्रयोग में मौलिक हो और जिसका निर्माण तथा उद्घाटन एक स्त्री के मस्तिष्क और हाथ से किया गया हो।''*

(पाठक/त्यागी 2011)

संदर्भ

एलैक्स, शीलू मैरी. 2008. *शिक्षा दर्शन.* रजत प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 257–272

पाठक एवं त्यागी. 2005–06. *शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त.* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ. 723–731

पाण्डेय, रामशकल. 2011. *शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि*, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 155–163

लाल एवं पलोड़. 2010. *शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार*, आर.लाल बुक डिपो. मेरठ, पृष्ठ 337–352

वर्मा, निर्मल. 2006. *विश्व के महान शिक्षाशास्त्री.* ओमेगा पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली, पृ. 114–125

सक्सेना, सरोज. 2010. *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार.* साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृ. 406–410

सक्सेना, एन.आर. स्वरूप. 2007. *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत.* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 844–851